

---

# Upadesha Dashakam

उपदेशदशकम्

## Document Information

---

Text title : Upadesha Dashakam

File name : upadeshadashakam.itx

Category : upanishhat, dashaka, upadesha, advice, upaniShat

Location : doc\_upanishhat

Author : Krishnananda Saraswati

Proofread by : Rajesh Thyagarajan

Description/comments : Minor works of Shri Krishnananda Saraswati

Latest update : November 6, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 6, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

## Upadesha Dashakam

### उपदेशदशकम्



अम्बरमडागडनऽम्बरविऽम्बिमारवमरीथिपरिवाडपरिडासि ।  
सत्यदृशि यत्र समुद्येति वियदादिः तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ १ ॥

चित्रकमलित्तिकमिवोद्यति यत्र व्योमनि विभूमनि समस्तमनवस्थम् ।  
सत्यसुभओधवपुरस्ति यदनन्तं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ २ ॥

उद्धनघनस्थितिविमोडसमुद्यत्ताऽयविनिघ्न जगदायसविकारैः ।  
व्येति न समेति न य यत्परमपारं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ३ ॥

अल्पकमनल्पमलिमन्यपविकल्पे यत्र य न पश्यति शृणोति न य किञ्चित् ।  
यत्परमभूमसुभवस्तुपरिगीतं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ४ ॥

अम्बरमणोरमलभिम्बमनुविभ्यदृढमऽगिमतरऽगगुणसऽगतमिवान्धौ ।  
बुद्धिगुणभङ्गमिव यत्तदनुविद्धं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ५ ॥

कस्तव स समकवितस्तिमितकायो द्रुस्तरसमस्तरुगुपस्तरुणको यः ।  
यस्तु तमसः परमपारसुभरुपं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ६ ॥

पश्यति शृणोति परिजिघ्रति य येन स्वाद्यति वायमभिव्यक्त्यविशयेन ।  
शश्र्चदधिविश्रमनुपश्यति धियं यत्तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ७ ॥

सत्वगुणवृत्तिपटुनृत्तपरिवर्तानिऽगति मणिधुतिनिरऽगमपसऽगम् ।  
तेजयति यन्न रविचन्द्रमुभतेजः तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ८ ॥

वस्तु जगतश्च यदनन्तरमभाड्यं यस्य य जगतदनन्तरमभाड्यम् ।  
यस्य जगदेतदजगस्य परिशुद्धं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ९ ॥

अद्वयमनादिमदनन्तरमनन्तं सन्ततसुभं तद्गुपशान्तगुणमोडम् ।  
ज्योतिरनुदीतकमनस्तमितमेकं तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ १० ॥

गुड्यमिदमेतद्गुपदेशदशकं यस्त्वक्तसलैषाण गुणौ गुरुपुरस्सन् ।  
शीलयति सोऽपि य गृणाति गुरुभूतः तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ ११ ॥

निस्तमसि नीरजसि निर्गलितसत्त्वे तेजसि विवेकजुषि भेदमतिशून्यम् ।  
यद्भयनमानसपदादिगमनन्तं तत्त्वमसि तथ्यमसि तत्त्वमसि तत्त्वम् ॥ १२ ॥

श्रीरामभद्रयोगीन्द्रयराणाम्भुजरेणुना ।

उपदेश दशश्लोकी कृष्णानन्देन निर्मिता ।

एति कृष्णानन्दकृतिषु उपदेशदशकं सम्पूर्णां ॥

Notes:

The upadeshadashakam consists of 12 slokas repeating 48 times the famous mahAvAkyaM मडावाक्यं of Chāndogyoupanishad tattvamasi तत्त्वमसि emphasising the identity of the individual soul with the Cosmic.

Proofread by Rajesh Thyagarajan

---

——  
*Upadesha Dashakam*

pdf was typeset on November 6, 2025

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

